साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2559, पौष पूर्णिमा, 24 जनवरी, 2016 वर्ष 45 अंक 8

For online **Patrika** in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

अभिवादनसीलिस्स, निच्चं वुड्ढापचायिनो।
चत्तारो धम्मा वड्ढन्ति, आयु वण्णो सुखं बलं॥
-- धम्मपद १०९, सहस्सवग्गो.

– जो अभिवादनशील है (और) नित्य बड़े-बूढ़ों की सेवा करता है, उसकी (ये) चार बातें बढ़ती हैं - आयु, वर्ण, सुख और बल।

करुणा एवं शांति की धर्मदूत -- श्रीमती इलायचीदेवी गोयन्का

परम पूज्य माताजी विश्व विपश्यनाचार्या श्रीमती इलायचीदेवी ने ८६ वर्ष की पकी हुई आयु में दिनांक ५-१-२०१६ को सुबह ११.१५ बजे बड़ी सजग अवस्था में शांतिपूर्वक इस संसार से विदाई ली। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव का आजीवन साथ निभाया और धर्मपथ पर आगे बढ़ती हुई विपश्यना के सभी कार्यों को पूरा करने में योगदान दिया। उनके पश्चात भी वे अपनी जिम्मेदारियों को तत्परता से निभाती रहीं।

पूज्य माताजी का जन्म मांडले के एक मारवाड़ी परिवार में १८ जनवरी, १९२९ को हुआ था। उस समय की परंपरा के अनुसार बारह वर्ष की कच्ची उम्र में ही परिवार वालों ने बुधवार, २१ जनवरी, १९४२ को श्री सत्यनारायण गोयन्काजी से इनका विवाह कर दिया था। यद्यपि श्री गोयन्काजी ने इसका भरपूर विरोध किया परंतु दोनों परिवारों के बुजुर्गों के सामने उन्होंने घुटने टेक दिये। संयोग से विवाह के कुछ दिनों पश्चात ही द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया। जापान ने अंग्रेजों को भगाने के लिए मांडले पर भयंकर बमबारी शुरू कर दी। तब गुरुजी के नेतृत्व में परिवार के अनेक सदस्य बरमा छोड़ कर पहाड़ियों के रास्ते पैदल ही भारत की ओर चल पड़े। कठिनाइयां झेलते हुए पहाड़ियां पार करके ये लोग भारत के मैदानी क्षेत्र में आ कर रेल की यात्रा करते हुए चूरू (राजस्थान) पहुँचे। ये सब भाग्यशाली रहे, क्योंकि अनेक लोगों ने बीच पहाड़ियों में दम तोड़ दिया। कुछ समय तक ये चूरू के अपने पैतृक निवास में रहे। माताजी अपने मां-बापू के साथ राजस्थान के सुलताना गांव चली गयी थीं। वहां से ४-५ महीने बाद वापस आ कर चूरू रहने लगीं। वहीं पर उनके प्रथम दो पुत्रों- गिरधारीलाल और बनवारीलाल का जन्म हुआ। गुरुजी के बड़े भाई श्री बाबूलालजी, गुरुजी की मां (जिन्होंने उन्हें गोद लिया था यानी श्री राधेश्याम की मां), माताजी तथा दोनों बच्चों को साथ लेकर गुरुजी चूरू में व्यापार-धंधा करते रहे। कुछ वर्ष बाद वे अपनी मां, माताजी तथा बच्चों को साथ लेकर दक्षिण में केरल के कन्नानूर में जाकर व्यापार करने लगे। फिर वहां से सब को साथ लेकर चेन्नई आ बसे और वहीं से पुनः बरमा लौटे।

पारिवारिक जीवन एवं सहनशीलता

बरमा के हालात ठीक होने पर लगभग पांच वर्ष बाद ये सब लोग फिर बरमा गये और माताजी लगभग २५-३० सदस्यों वाले बहुत बड़े गोयन्का परिवार की देखभाल करने लगीं। गुरुजी की सात बहनें तथा श्री राधेश्याम की सात बहनें, जिनमें से कुछ की शादी हो गयी थी फिर भी उनके परिवार के कई लोग साथ रहते थे। अपनी सेवा एवं सहनशीलता के बल पर माताजी ने सब का मन जीत

विश्व विपश्यनाचार्या श्रीमती इलायचीदेवी गोयन्का, १८.१.२९ से ५.१.२०१६

लिया। केवल सास-श्वसुर की ही सेवा नहीं की, बल्कि अन्य सभी सदस्यों की सेवा करती हुई अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों में जुट गयीं जिन्हें उन्होंने आजीवन बखूबी निभाया। जीवन के अनेक उतार-चढ़ावों को बड़ी चतुराई और धर्मबुद्धि से झेला।

गुरुजी अनेक सामाजिक एवं व्यावसायिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे। अतः नित्यप्रति देर रात तक किसी न किसी मीटिंग में लगे रहते। घर आते समय अपने कुछ संगी-साथियों को साथ लाते और आते ही तुरंत भोजन लगाने का आदेश देते। कभी-कभी उनके साथ ५-६ मेहमान होते परंतु माताजी उनकी आवभगत में लग जातीं, भले ही परिवार के सब लोग भोजन करके सो चुके होते और सभी

आगंतुकों के लिए पर्याप्त भोजन न भी होता, तब भी वे जैसे-तैसे परिश्रम करके सब को भोजन अवश्य करातीं। यह उनकी धीरता, त्वरित बुद्धि और व्यवहार-कुशलता का ही प्रमाण है।

अत्यधिक व्यस्तता के कारण पूज्य गुरुजी में आये तनावों, चिड़चिड़ेपन एवं अहंकार-वृद्धि के कारण परिवार के लोग परेशान होते, विशेषकर बच्चे। इनके कारण उनका माइग्रेन-दर्द भी बढ़ता जा रहा था। विपश्यना के प्रभाव से इन सब में कमी आने लगी तब माताजी के मन में भी सद्धर्म के प्रति श्रद्धा जागी। वैसे श्री गोयन्काजी के पहले शिविर के समापन पर जब वे उन्हें लेने आई.एम.सी. आश्रम पहुँची तभी सयाजी ऊ बा खिन ने उन्हें आनापान की दीक्षा दे दी थी। परंतु विपश्यना का पहला शिविर उसके कुछ समय पश्चात ही सयाजी के सान्निध्य में पूरा किया और धीरे-धीरे धर्मपथ पर आगे बढ़ती चली गयीं। इसके पश्चात सयाजी के साथ अनेक शिविर किए और खूब लाभान्वित हुईं। परंतु अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों से कभी मुख नहीं मोड़ा, बल्कि और मुस्तैद होकर सबकी देखभाल पहले से भी अधिक तन्मयता से करती रहीं।

उनकी एक विशेषता और थी- घर का बजट बना कर काम करना। उन्होंने सब के कपड़े आदि से लेकर सभी प्रकार की जरूरतों का पूरा ध्यान रखा। घर का सारा खर्च निश्चित बजट में पूरा करने का नियम बना लिया था और फिजूलखर्ची पर पूरा अंकुश लगा कर रखा। इस प्रकार बड़े संयुक्त परिवार में घर-खर्च के लिए प्राप्त पैसों में से कुछ बचा ही लेतीं। कभी घाटे का बजट नहीं बनाया। जरूरत पड़ने पर स्वयं सिलाई भी करतीं और परिवार के अन्य लोगों को प्रेरित करती रहतीं।

सयाजी द्वारा प्रशिक्षण

सयाजी उन्हें बार-बार कहा करते थे- बेटी, तुम्हें बहुत काम करना है, बहुत काम करना है। उस समय न तो वे आचार्य थीं और न ही मन में ऐसा कोई स्वप्न था। ऐसे में सयाजी की बातें बार-बार सुन कर चिंतित हो जातीं। मन में सोचतीं कि इतने बड़े परिवार का सारा काम तो कर ही रही हूं फिर सयाजी बार-बार क्यों कहते हैं कि मुझे बहुत काम करना है। अब और क्या करना होगा और कैसे कर पाऊंगी? कभी श्री गोयन्काजी गुरुजी से पूछ भी लेतीं कि सयाजी ऐसा क्यों कहते हैं? पर वे भी क्या कहते? उन्होंने स्वयं ऐसी कोई कल्पना नहीं की थी कि उन्हें भारत जाकर विपश्यना सिखानी पड़ेगी। सयाजी का उक्त कथन तो बहुत बाद में समझ में आया।

जून १९६९ में पूज्य गुरुजी भारत आ गये परंतु माताजी उसके दो वर्ष बाद आयीं। इस बीच उन्होंने अपनी दैनिक साधना नहीं छोड़ी। वे नित्य प्रति केंद्र में जाकर सयाजी के साथ साधना करती रहीं। कभी अपनी गाड़ी न होती तब भी वे किसी न किसी के साथ बस में बैठ कर आश्रम चली जातीं। किसी कारणवश यदि वहां जाना संभव न होता तब ऊपर के साधना-कक्ष में बैठ कर ध्यान कर लेतीं। गुरुजी भी अपने पत्रों में उन्हें आश्रम जाकर ध्यान करते रहने के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे। इस प्रकार नियमित साधना करते रहने से, पूज्य गुरुजी के साथ भारत न आ पाने की उनकी सारी व्याकुलता दूर हो जाती, मन की उलझनें दूर हो जातीं और मन शांत रहता। केंद्र में जाने पर सयाजी उन्हें मंगल मैत्री देते हुए कुछ काम दे देते। जैसे कहते पगोडा के शून्यागारों का दरवाजा खोल कर देखो क्या साधक ठीक से साधना कर रहे हैं। एक बार माताजी ने आकर बताया कि एक साधक गहरी नींद में सो रहा है। उन्होंने कहा, ठीक है उसे सोने दो। उसकी वर्षों की ही नहीं, जन्मों की नींद अधूरी है। धर्म की गूढ़ता समझाते हुए इस बात की भी ट्रेनिंग देते कि प्रशिक्षण के दौरान साधकों का परीक्षण और मार्गदर्शन कैसे किया जाता है। आदि...

पत्राचार के कुछ अंश

माताजी के रंगून रहते गुरुजी से पत्राचार होता रहता था। एक बार भारत में गुरुजी से विपश्यना सीख कर थाईलैंड आदि देशों का भ्रमण करते हुए श्री श्रीराम एवं सुमन तापड़िया बरमा पहुँचे। उस समय माताजी ने उनकी खूब आवभगत की और उनके बारे में यों लिखा -- ''श्री तापड़िया और उनकी धर्मपत्नी यहां आये, उनसे मिल कर बहुत प्रसन्नता हुई। मन में ऐसा लगा कि वे मेरे ही परिवार के सदस्य हैं। उनकी पुण्यपारमी देख कर और आश्रम के प्रति उन दोनों की श्रद्धा देख कर हम सब और पूज्य गुरुदेव बहुत प्रसन्न हुए। चार दिनों तक उन्होंने यहीं आश्रम में ध्यान करके अपनी साधना को पुष्ट की। जाते समय जब उन्होंने सयाजी से कहा कि मेरे लायक कोई सेवा बताइये तब सयाजी ने कहा, भारत में एक विपश्यना केंद्र बनाने में मदद करो। और क्या लिखूं। अब मैं यहां ज्यादा रहना नहीं चाहती, पर मजबूर हूं।...''

पूज्य गुरुजी ने लिखा, ''सुमन भी तुम्हारी प्रशंसा करते नहीं थकती। साथ ही यह भी लिखा कि यहां प्रतापगढ़ जैसे गांव में, गांव की अनेक अनपढ़ स्त्रियां शिविर से लाभान्वित हुईं। यदि तुम साथ रहती तो इन्हें और खुल कर बात करने तथा धर्म में पुष्ट होने का अवसर मिलता। मैं भी यही चाहता हूं कि तुम जल्द से जल्द भारत आओ।''

पूज्य गुरुजी ने अक्टूबर १९६९ में कलकत्ता शिविर के अंत में माताजी की ओर से ८ भिक्षुओं को भोजन दान दिया और कुछ सामग्री भी। इसकी सूचना पाकर माताजी बहुत प्रसन्न हुईं। उससे पूर्व सितंबर १९६९ में सारनाथ के शिविर-समापन पर भी पूज्य गुरुजी ने संघदान आयोजित किया था। साधना करके थोड़ी-बहुत मात्रा में भी मन को स्वच्छ करने के बाद भिक्षु निश्चित ही दान के लिए बड़ा पुण्यक्षेत्र बन जाते हैं। उस समय लगभग सभी शिविरों में कुछ भिक्षु बैठते और अंतिम दिन पूज्य गुरुजी तथा अन्य साधकों की ओर से संघदान का आयोजन होता था। इसका पुण्य माताजी को तथा परिवार के अन्य सदस्यों को अर्पित करते। ऐसे समाचार माताजी को पत्रों के माध्यम से जाते रहते और वे बहुत प्रसन्न होतीं। गुरुजी उन्हें आश्वासन देते रहते कि या तो वे शीघ्र ही बर्मा लौट सकेंगे या माताजी यथाशीघ्र भारत आ सकेंगी और इस धर्मयज्ञ में भाग लेकर प्रसन्न ही होंगी।

भारत आगमन

अंततः सन १९७१ में वे भारत आयीं तो कुछ महीने बाद ही घर की जिम्मेदारियां परिवार के सदस्यों को सौंपते हुए पूज्य गुरुजी के साथ शिविरों में जाने लगीं। पूज्य गुरुजी कहा करते थे कि यदि वे उनके साथ न होतीं तो हमारी धर्मपुत्रियों को मेरे पास आने और धर्म सीखने में झिझक होती। वह मेरे साथ रही तो अधिकाधिक महिलाओं को विपश्यना शिविरों में भाग लेना सुगम हो गया। वह सदा मेरे साथ बैठ कर मंगल मैत्री देती रहती है इसीलिए तुम सब यहां बैठ कर साधना कर पा रहे हो, अन्यथा उठ कर भाग जाते। यही उनका सबसे बड़ा योगदान है और मुझे भी उनकी प्रबल मंगल मैत्री का सहारा मिलता है।

विपश्यना केंद्रों की स्थापना

माताजी के भारत आने से गुरुजी को शिविर की अनेक कठिनाइयों से निपटने में सहयोग मिला। धम्मगिरि के प्रथम विपश्यना केंद्र की स्थापना में माताजी ने प्रबल योगदान दिया। इगतपुरी की जमीन देखने के लिए पूज्य गुरुजी के साथ उन्हें आज के म्यंमा द्वार से लेकर ऊपर तक ऊबड़-खाबड़ ही नहीं बल्कि रास्ते पर बिखरे बड़े-बड़े पत्थर के टुकड़ों से ठोकर खाने से बचते हुए पैदल चल कर आयीं क्योंकि पत्थरों के कारण उससे आगे गाड़ी नहीं जा सकती थी। (बर्षों तक गाड़ी जाने लायक सही रास्ता नहीं बना।) फिर भी जमीन देख कर उन्होंने तथा गुरुजी ने उसे खरीद लेने की स्वीकृति दे दी।

इसी प्रकार जब भी कोई केंद्र बनाने की बात उठती, उनकी सलाह के बिना गुरुजी कभी उसकी अनुमति नहीं देते थे।

प्रारंभ में उन्होंने अनेक प्रकार के कष्ट उठाए। धम्मगिरि के केंद्र में पहले चार डारमेटरी, भोजनालय आदि ही बने थे। आचार्य निवास बना परंतु कांट्रैक्टर को उसका पैसा चुकाना रह गया था। इसलिए गुरुजी ने उसका उपयोग न करके 'डी' डारमेटरी में निवास करना उचित समझा और वहीं रह कर पहला शिविर लगाया, जिसमें उस समय शौचालय भी नहीं था। नहाने के लिए पीछे की ओर चटाई से घेर कर बाहर से बाल्टी भर कर पानी लाया जाता और शौच आदि के लिए गुरुजी सहित माताजी भी नीचे सीढ़ियां उतर कर सामूहिक शौचालय में जातीं, परंतु माथे पर कभी शिकन नहीं आने दिया। इसी प्रकार अन्य विपश्यना केंद्रों के भी प्रारंभिक कष्टों को पूज्य गुरुजी के साथ वे सहर्ष झेलती रहीं। बिना केंद्र वाले शिविरों में तो अनेक प्रकार की कठिनाइयां होती ही हैं।

विदेशों में धर्मप्रसार

अमेरिका के एक प्रारंभिक अकेंद्रीय शिविर में पहले दिन दोपहर का भोजन किये बिना ही पूज्य गुरुजी और माताजी साधकों के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए बैठ गये। क्योंकि साधक बहुत थे और धर्मसेवक बिल्कुल न के बराबर। सभी साधकों के कुछ न कुछ प्रश्न थे। शिविर ऐसे उजाड़ और ऊंचे-नीचे स्थान पर लगा था जहां इतने लोगों के लायक न कोई साधन न सुविधा। साधक आ गये तब तक साधना-कक्ष का बड़ा टेंट खड़ा नहीं हो पाया था। किसी प्रकार देर रात तक आनापान दिया गया और दूसरे दिन प्रातः से ही प्रश्नों की बौछार होती रही। १२ बजे तक भोजन नहीं तैयार हो पाया तो बिना भोजन किये ही वे साधकों को इंटरव्यू देने बैठ गये। २ बजे से ऊपर तक प्रश्नोत्तर चले तब कहीं जाकर भोजन करने का समय मिला। शाम की चाय में भी विलंब हो गया। ऐसे अनेक कष्टों का सामना करने वाले गुरुजी तो दृढ़ पराक्रमी थे ही, माताजी की सहनशीलता इतनी दृढ़ न होती तो शिविर कैसे सफल होते?

देश-विदेश के ऐसे सभी शिविरों में माताजी गुरुजी की छाया बन कर साथ रहीं। उनकी हर आवश्यकता का ध्यान रखा। अतः कह सकते हैं कि शिविरों की सफलता का प्रमुख श्रेय माताजी को ही जाता है। बढ़ती उम्र के साथ कदम-कदम पर उनका सहयोग पूज्य गुरुजी के लिए प्रभूत प्रेरणा-स्रोत बनता गया।

माताजी के अमूल्य सुझाव

माताजी केवल गृहिणी ही नहीं, अपने आप में संपूर्ण व्यवस्थापक मंडल थीं। उन्होंने व्यवस्था संबंधी सभी मामलों में अपना अमूल्य योगदान दिया है। रसोईघर की व्यवस्था के साथ-साथ काम करने वाले कर्मचारियों एवं महराज तक से भेंटवार्ता करती रहतीं और उनके कष्ट, कठिनाइयां दूर करने का प्रयत्न करती रहतीं। मौसम के अनुसार ऋतु-फलों का उपयोग कैसे करना चाहिए और उन्हें भविष्य के लिए समुचित ढंग से सुरक्षित कैसे रखना चाहिए। स्वयं रसोईघर में जाकर अपने हाथों से अचार आदि बना कर दिखातीं। शिविर व्यवस्थापक- व्यवस्थापिकाओं को अनेक गुर सिखातीं। दान में प्राप्त वस्तुओं का मूल्य समझातीं कि कितने कष्ट उठा कर कोई दान देता है तो उसका अधिकतम उपयोग कैसे हो। यों ही दिखावे में उसे खर्च न किया जाय। **किसी से कोई मांग न करके जो है उसी में संतुष्ट रहें। किसी के उपकार को कभी न भूलें।** एक बार किसी ने कहा कि फलां जगह के परदे गंदे हो गये हैं, उन्हें बदल देते हैं। उन्होंने कहा गंदे हो गये तो धुला कर वापस लगा दो, बदलने की बात क्यों? दान में प्राप्त एक-एक पैसे का सदुपयोग होना चाहिए। माताजी सिलाई भी अच्छी तरह जानती थीं और उन्होंने धम्मगिरि में सिलाई मशीन मँगवा कर स्वयं बैठ कर सिलाई करने में योगदान दिया।

सहायक आचार्यों के चुनाव आदि से लेकर केंद्रों की बागवानी आदि तक सभी छोटी बड़ी चीजों पर उनका ध्यान रहता और सब में अपना सुझाव देती रहतीं जिसे गुरुदेव सदैव सहर्ष स्वीकार करते और अपना भी सुझाव जोड़ देते।

वैश्विक संस्थानों का संचालन

पूज्य गुरुजी के जाने के बाद पूज्य माताजी सभी आचार्यों तथा केंद्रों के प्रश्नों का समाधान करती रहीं। समय-समय पर वे केंद्रों के हिसाब-किताब भी पूछती रहीं और पगोडा आदि पर होने वाले कार्यों का निरीक्षण करते हुए मार्गदर्शन देती रहतीं। अनेक कार्य उनकी देख-रेख में संपन्न हुए और समय-समय पर उन्होंने उनका उद्घाटन भी किया। इस प्रकार एक अनुभवी आचार्य की जिम्मेदारियों को बखूबी निभाती रहीं।

एक बार सहायक आचार्य सम्मेलन में उन्होंने बहुत थोड़े से शब्दों में अपने मन की बात कह दी और सभी आचार्यों ने उसे सहर्ष स्वीकार करते हुए इस बात का आश्वासन दिया के वे सब मिल कर पूज्य गुरुजी के बताये मार्ग-निर्देशनों का पालन करेंगे और उनके स्वप्नों को साकार करने का भरसक प्रयत्न करते रहेंगे। धर्म को अपने जीवन में उतारेंगे और पीढ़ियों तक इसे सुरक्षित रखने का संकल्प लेकर काम करेंगे।

पूज्य गुरुजी के बाद

पूज्य गुरुजी को अंतिम भोजन उन्होंने अपने हाथ से खिलाया था। भोजन के बाद नित्य की भांति बैठे न रह कर जब वे तुरंत अपने कमरे में चले गये तब माताजी को आभास हो गया कि उनकी तबीयत ठीक नहीं है। यथाशीघ्र अपना भोजन समाप्त करके वे भी कमरे में आयीं। आते ही देखा कि गुरुजी की सांसे तेज चल रही हैं। उन्होंने तुरंत श्रीप्रकाश को आवाज दी। परिवार के सब लोग एकत्र हो गये। कुछ पलों में ही वे समझ गयीं कि उनके अंतिम क्षण आ गये हैं फिर भी बिल्कुल शांत रहीं, मन को मजबूत रखा, धर्म के विधान को स्वीकार किया और अपना शेष जीवन धर्मकार्य को आगे बढ़ाने में ही लगाया।

पूज्य गुरुजी के साथ निरंतर छाया की भांति रहने वाली, ज्यादातर चुपचाप, शांत और मुस्कराती हुई मीठा बोलने वाली, सब के सुख-दुख की चिंता करने वाली माताजी ने अंतिम क्षणों में मुस्कराहट के साथ विदाई ली। बुजुर्गों के जाने के बाद कहा जाता है कि हम पर से उनकी छत्रछाया उठ गयी। पूज्य गुरुजी के जाने से एक बड़ी छत्रछाया पहले ही उठ गयी थी। आज उनका साथ देने वाली छत्रछाया भी चली गयी। लेकिन हमारा साथ देने के लिए उन दोनों ने हमें जो धर्म सिखाया है वह सदैव हमारी सहायता करता रहेगा। अब हमें स्वयं ही अपना द्वीप बनना है। **अत्त दीपो भव।** -- अलविदा माताजी!

पूज्य माताजी के अंतिम दिन

दिनांक ५ दिसंबर को पित्ताशय में पथरी की शिकायत के कारण उन्हें अस्पताल में भरती करना पड़ा। पथरी निकाल दी गयी परंतु मवाद पूरी तरह नहीं निकल पाया और उसका संक्रमित विष सारे शरीर में फैलने लगा। इसके कारण उपचार में कठिनाई हुई और बीच-बीच में उतार-चढ़ाव के साथ समय निकलता चला गया। फिरभी उनका धर्मबल इतना मजबूत था कि सारे कष्टों के बावजूद वे सदैव शांत और सचेत रहीं। समय-समय पर जवाब भी देती रहीं।

२५ दिसंबर को बिहार के राज्यपाल महामहिम श्री रामनाथ कोविन्द (साधक) विश्व विपश्यना पगोडा देखने आये। वहां सुना कि माताजी अस्पताल में हैं तो २६ दिसंबर को दोपहर बाद वे माताजी से मिलने अस्पताल आये। माताजी ने हाथ उठा कर उन्हें आशीर्वाद दिया तो वे बहुत प्रसन्न हुए। बाद में मृत्यु का समाचार सुनने पर उन्होंने संवेदना संदेश भी भेजा।

Registered No. NSK/235/2015-2017

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2015-2017

४ जनवरी की प्रातः ७ बजे आंखें बंद देख कर मैंने मेरा नाम बता कर कहा, यादव का प्रणाम माताजी! वे आंखें खोल कर देखने लगीं और मुस्करा कर मेरा अभिवादन स्वीकार करते हुए आशीर्वाद दिया। दिन में और भी कई लोगों से मिलीं। परंतु उसी रात उनका कष्ट बढ़ गया। रात को १२ बजे अस्पताल से फोन आया कि माताजी का बीपी काफी नीचे गिर गया है। श्रीप्रकाशजी तुरंत श्रीमती नैनाजी के साथ अस्पताल पहुँचे। तब तक डॉक्टर ने दवा देकर प्रेसर कन्ट्रोल कर लिया था। अतः रात १ बजे के बाद वापस लौट आये।

पूज्य गुरुजी और माताजी के साथ पिछले आठ वर्षों से श्रीप्रकाश एवं नैनाजी रह रहे हैं। ये सुबह की साधना में साथ बैठते और उसके बाद देर तक धर्मचर्चा होती। इन दोनों ने उनकी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखा। अतः इनके साथ विशेष स्नेह-संबंध होना स्वाभाविक है। माताजी अपना रात का भोजन श्रीप्रकाश के बिना न करतीं। उनके काम से लौटने में चाहे जितनी देर हो, वे उनका इंतजार करती रहतीं।

आई.सी.यू. के जंजाल एवं कठिन उपचार के बावजूद वे सदैव सचेत रहीं। हर अवस्था में श्रीप्रकाशजी जैसे ही पुकारते वे आंखें खोल देतीं या पलकें हिला कर जवाब देतीं। परंतु ५ की सुबह डॉक्टर ने कहा, ''अब हम कुछ नहीं कर सकते। अंदर से कोई जवाब नहीं मिल रहा है, आंतें काम नहीं कर रहीं हैं परंतु इन्हें देख कर आश्चर्य होता है कि इनके चेहरे पर या शरीर में कहीं कोई खिंचाव-तनाव नहीं है।'' उसे क्या पता कि माताजी किस उच्च स्तर की साधिका थीं। अतः उसने यही कहा कि इन्हें इसी प्रकार शांति के साथ जाने दीजिए। आप लोग अपनी प्रार्थना या साधना जो कुछ करना चाहें, करते रहें। उस समय, ११.१५ बजे माताजी के मुंबई निवासी तीनों लड़के, सभी बहुएं, नाती, पोते, पोतियां उनके पति आदि समस्त परिवार उपस्थित था।

मेरे वे शब्द और माताजी की मुस्कराहट स्मृतिपटल पर सदैव अंकित रहेगी। माताजी! शत-शत प्रणाम। सब का मंगल हो!

---------- *अन्य सूचनाएं कृपया पृष्ठ तीन पर देखें...*

वर्ष २०१६ के सभी एक-दिवसीय महाशिविर

रविवार, २२ मई - बुद्ध पूर्णिमा, **रविवार, १७ जुलाई** - गुरु पूर्णिमा, **रविवार, २ अक्टूबर** - पू. गुरुजी श्री गोयन्काजी के प्रति कृतज्ञता (*२९ सितंबर*) एवं शरद पूर्णिमा -- के उपलक्ष्य में **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** में एक दिवसीय महाशिविर होंगे। **शिविर-समयः** प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक। 3 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपोसुखो**-वाले **सामूहिक तप-सुख** का लाभ उठाएं। **संपर्कः** 022-28451170 022-337475-01/43/44- Extn. 9, (**फोन बुकिंग :** प्रतिदिन **11** से **5** बजे तक)
Online Registration: www.oneday.globalpagoda.org

दोहे धर्म के

आओ बांटें जगत को, विपश्यना का ध्यान।
जन-जन का मंगल सधे, पायँ धरम का दान॥

धरमसेवकों में यदी, अहंभाव जग जाय।
तो सेवा कलुषित बने, फल दूषित हो जाय॥

बिना स्वार्थ सेवा करें, ऐसे बिरले कोय।
याद रखें उपकार को, वे भी बिरले होंय॥

शील धरम पालन करें, दूर होंय दुख शोक।
शील धरम से सुधरते, लोक और परलोक॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

धरम दान सब दान स्यूं, सिरै-मोर कहलाय।
देवणियो अर लेणियो, दोन्यूं ही तर ज्याय॥

साधक रै अभ्यास मँह, समुद सहायक होय।
भोजन कुटिया दान भी, धरम दान ही होय॥

सील पकै चित थिर हुवै, प्रग्या जगती जाय।
इसै धरम रै दान स्यूं, मुक्ति द्वार खुल ज्याय॥

सौरै मन स्यूं दान दे, सौरै मन सुख होय।
दोरो मन करतां तुरत, सुख अपणो दे खोय॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट - इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६, अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: **morolium_jal@yahoo.co.in**
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, जी-२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2559, पौष पूर्णिमा, 24 जनवरी, 2016**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2015-2017**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2015-2017
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 15 January, 2016, DATE OF PUBLICATION: 24 January, 2016

If not delivered please return to:-

विपश्यन विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org